भजन

कहें रूह खसम न सहे जायें सितम, कहें रूह खसम..

रूबरू तेरे होके मैं इजहार करूं ये

पिया मेरे कुछ तो करो देर लगा रखी है,क्या वजह है जो ये रात खैंच रखी है

इस जहाँ से ऐ पिया मेरी नजर को हटा,या इस खेल में तू परदा अब ये उठा

तू है मेहबूब मेरा करुं दीदार तेरा

1 तुम रहो एक पिया बस मेरी निगाहों में,मेरी नजरें बिछी हैं पिया तेरी राहों में

तू मेरे दिल की हर एक सदा को समझे,क्या कहूँ तुमसे न कुछ सिवा तेरे सूझे

दिल मेरा अर्श तेरा.. रहे तू इसमें पिया..

फिर क्यूं तुमने पिया.. ऐसा पर्दा ये किया..

तुमने चरणों में मुझे अपने बिठा रखा है,ख्वाब रूहों को ये कैसा दिखा रखा है

ख्वाब अब तो ये हटा, चाहे पर्दा ये उठा

2 रूहें तेरी जब अर्श में उठ जाएँगी, अपना वो चैन पिया मेरे वही पाएँगी करो अब

इतनी इनायत ऐ मेरे धनी, दे दो इश्क मेरा जान के अंगना अपनी

अब नहीं रहना यहाँ.. सुनो ऐ मेरे पिया

है यह अर्जी मेरी.. आगे मर्जी है तेरी..